

पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में बढ़ोतरी के मायने

II

पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में बढ़ोतरी के मायने

चुनौतियाँ

- अपनी आवश्यकता की 83% आवात पर निर्भता और तीसरा सबसे बड़ा नियोजन होने के कारण बढ़ती कीमत एक महत्वपूर्ण चुनौती है।
- ईरान से आवात की कम करने हेतु अमेरिकी दबाव भी भारत में कीमत बढ़ि का कारण हो सकता है।
- कीमतों में बढ़ि व्यापार घटे के बदाएँ, जो अंततः चालू खाता घटे में बढ़ि करेगा।

पेट्रोलियम उत्पादों पर करारोपण

- सरकार ने वर्ष 2010 में और वर्ष 2014 में क्रमशः पेट्रोल और डीजल की कीमतों के नियंत्रण से स्वत्व को मुक्त रखा है।
- 16 जून, 2017 से पेट्रोल और डीजल की कीमत प्रतिदिन संरोधित की जाती रही है, ताकि तेजी से उत्पन्न होने वाली अस्थिरता से उपभोक्ता को बचाया जा सके।
- जोएसटी परिवर्त द्वारा नियंत्रण लिये जाने तक पेट्रोलियम पदार्थों को वस्तु एवं सेवा कर से बाहर रखा गया है।
- बढ़ सकार को पेट्रोलियम पदार्थों पर उत्पाद कर आरोपित करने का अधिकार है, जबकि गान्धी सकार द्वारा विक्री कर आरोपित किया जाता है।

कीमतों पर नियंत्रण

- सरकार द्वारा उत्पाद कर को कम कर।
- सड़क सेवा जैसे कीमत में 8 रुपए प्रति लीटर है, जो भी कम किया जा सकता है।
- पेट्रोल पर कमीशन में बढ़ि को नियंत्रित कर।

आगे की राह

- जून के वैकल्पिक योगों, जैसे - एथेनेल, मेथेनेल, जैव-सारोहित प्रकृतिक गैस आदि के माध्यम से पेट्रोलियम पर निर्भता को कम करना होगा।
- जल एवं नाभिकीय योगों से विजली उत्पादन पर बल देना होगा तथा यहन एवं सेवा जून के प्रयोग को सुनिश्चित करना होगा।
- पेट्रोलियम जैसे भी जोएसटी के दायरे में लाना चाहिये।
- राजस्व के अन्य योगों पर भी सरकार को ध्यान देना चाहिये।

संदर्भ

- पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में बढ़ोतरी हमेशा ही एक विवादपूर्ण विषय रहा है।
- जुलाई 2018 में पेट्रोल एवं डीजल की कीमतों में काफी बेबत को मिली जिससे मोड़िया एवं देश के अन्य प्रतिक्रियाओं में काफी झोल्युन देखा गया।

कीमत बढ़ि के कारण

- पेट्रोलियम एक एकान्तरिक सेल के अनुसार, कीमतों में बढ़ोतरी का मुख्य कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ि है।
- भारतीय बास्केट (Indian Basket) के कच्चे तेल का औसत मूल्य वर्ष 2016-17 में \$47.56 प्रति बैरल था जो मार्च 2018 में \$63.80 प्रति बैरल हो गया।
- उल्लंघनीय है कि कच्चे तेलों का भारतीय बास्केट ओमान, दुबई और ब्रेट क्रूड के औसत का प्रतिनिधित्व करती है।
- तेल नियंत्रक देशों के साइबन (OPEC) द्वारा तेल के उत्पादन में कमी की गई है।
- बढ़ती यांत्र, बैंग्नजुएला में राजनीतिक अस्थिरता, ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध को कीमत बढ़ि के परिवर्तन में देखा जा रहा है।

प्रभाव

- विभिन्न क्षेत्रों और उद्योगों, जैसे - परिवहन तथा पेट्रोलियम उद्योगों के लिये कच्चा माल होने के कारण इसकी कीमतों में अस्थिरता विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन व परिवहन की कीमतों को प्रभावित करती है।
- बत्तीनाल में रुपए के घूलने में सिरावट के साथ तेल की कीमतों में बढ़ि मुद्रासंबंधित को बढ़ा सकती है।
- कीमतों में अर्थात् बढ़ि व्यव को होतासाहित करती है जो अर्थक संबुद्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
- भारत कच्चे तेल की अपनी आवश्यकताओं के लगभग 83% के लिये आवात पर निर्भत है, ऐसे में तेल की कीमतों में बढ़ि सुनान संतुलन की भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी।

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/petroleum-price-hike>